पेशोला की प्रतिध्वनि का प्रतिपाद्य

प्रस्तुत कविता में कवि जयशंकर प्रसाद ने भारतीय इतिहास के एक गौरवपूर्ण अध्याय को पाठकों के समक्ष रखा है। 1572 ई. में राणा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी महाराणा प्रताप उदयपुर में सिंहासन पर आसीन हुए। उदयपुर में राजा बनने के बाद उन्होंने चित्तौड़ पर पुनः विजय प्राप्त करने, अपने वंश की कृति की रक्षा करने तथा अपनी शक्ति को फिर से स्थापित करने का दृढ़ संकल्प किया था। अपने इसी संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने अकबर जैसे महान शक्तिशाली सम्राट से लोहा लिया। हल्दीघाटी के युध्द में पराजित हुए, जंगलों में भटकना पड़ा। ऐसी स्थिति हो गई कि घास की रोटी भी खानी पड़ी, परंतु फिर भी अकबर के सामने अपना मस्तक नहीं झुकाया। अंत में जाकर भामाशाह से सहायता मिली। भीलों को संगठित कर चित्तौड़ और अजमेर सहित सम्पूर्ण मेवाड़ पर पुनः अपना अधिकार स्थापित किया। इसीलिए सभी इतिहासकार महाराणा प्रताप को त्याग, आत्मबलिदान, धैर्य, शौर्य, पराक्रम, वीरता एवं स्वाभिमान आदि गुणों से युक्त बताते हुए उनकी प्रशंसा की है। अपने जीवन में कठिन कष्टों को सहते रहे, परंतु अपने स्वाभिमान को कभी झुकने नहीं दिया। 1597 में महाराणा प्रताप पंचतत्व को प्राप्त हो गए। उनकी धरती उनकी मृत्यु के पश्चात पुनः परतंत्र हो गई। महाराणा प्रताप की जन्मभूमि उदयपुर में स्थित पेशोला झील को देखकर कवि प्रसाद का हृदय रो उठता है। आज पेशोला झील की लहरें शांत हैं, उसके किनारे पर स्थित झोंपड़े विषाद की मूर्ति बने हुए हैं। प्रकृति में भी कोई उत्साह नहीं दिखाई दे रहा है, चारों ओर कलंक की कालिमा फैली हुई है, दुंदुभी, मृदंग – तूर्य आदि शांत हैं, फिर भी कवि को वहाँ एक पुकार सी गूंजती हुई सुनाई पड़ती है कि क्या इस मेवाड़ में अब कोई व्यक्ति नहीं है जो महाराणा प्रताप की तरह दृढ़संकल्प ले सके कि मैं फिर अपनी इस परतंत्र मातृभूमि को स्वतंत्र करूंगा? कवि को पहले निराशा की अनुभूति होती है परंतु निराशा के मध्य से ही आशा भी जन्म ले रही है। कवि को अभी भी उम्मीद है कि पेशोला झील की लहरों में से उसे वही पुकार भरा शब्द गूंजता हुआ सुनाई पड़ रहा है परंतु महाराणा प्रताप के दृढ़संकल्प जैसी ध्वनि अथवा प्रतिध्वनि सुनाई नहीं दे रही है। जबकि यह वही मेवाड़ है, वही उदयपुर है जो वीर महाराणा प्रताप की जन्मभूमि है। कवि ने आधुनिक काल में नवयुवकों को प्रेरणा प्रदान करने हेतु देश को स्वतंत्रता दिलवाने वाले महाराणा प्रताप की कथा का संदर्भ लिया है। निश्चित रूप से यह कविता स्वदेश – प्रेम, त्याग, बलिदान एवं कर्तव्यपरायणता हेतु प्रेरित करती है।

अस्ताचलगामी सूर्य को देखकर कवि को मेवाड़ के सूर्य जैसे ओजस्वी वीर महाराणा प्रताप का स्मरण हो आता है। पेशोला झील आज शांत है, सम्पूर्ण प्रकृति शांत है। महाराणा प्रताप जैसे वीर योद्धा की धरती से आज किसी वीर की ध्वनि अथवा प्रतिध्वनि सुनाई नहीं दे रही है।

महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ की परिवर्तित अवस्थाओं को देखा था। सदैव चित्तौड़ की स्वतंत्रता के लिए वे अपना जीवन लुटाने के लिए तैयार रहते थे। उनके जैसा चित्तौड़ का वीर सुपुत्र दूर – दूर तक नहीं दिखाई दे रहा है।

कविता के अंत तक कवि महाराणा प्रताप जैसे वीर की ध्वनि सुनने को लालायित प्रतीत होते हैं। आज भी पेशोला झील के लहराते हुए अथाह जल – समूह को देखता हुआ कवि महाराणा प्रताप के दृढ़संकल्प की ध्वनि को सुनना चाहता है। जिस धरती के कण – कण में महाराणा प्रताप की वीरता समाई हुई है, उनका दृढ़संकल्प गूंजता रहा है, उसी उदयगिरि की पहाड़ियों से आज वीरता और दृढ़संकल्प की कोई प्रतिध्वनि सुनाई नहीं दे रही है

‘वह ध्वनि कहाँ” कहकर कवि ने संकेत कर दिया है कि जिस प्रकार महाराणा प्रताप ने मेवाड़ को स्वतंत्र करने का दृढ़संकल्प लिया था वैसा दृढ़संकल्प लेने वाला आज कोई नहीं है।